कार्यशाला रिपोर्ट

20 मई 2025 को डी.पी.एस सोसाइटी –मानव संसाधन विकास केंद्र (HRDC) द्वारा **'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF 2023) के संदर्भ में नई हिंदी पाठ्यपुस्तकों (कक्षा 6–8) का उपयोग'** विषय पर एक ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह सत्र कक्षा छठी से आठवीं तक के हिंदी शिक्षकों के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था,जिसका उद्देश्य हिंदी शिक्षकों को कक्षा 6,7 और 8 के लिए नवप्रस्तावित पाठ्यपुस्तकों की संरचना, शिक्षण रणनीतियों तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं से परिचित कराना था। ये पाठ्यपुस्तकें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 के अनुरूप तैयार की गई हैं। दिल्ली पब्लिक स्कूल,सेक्टर 45,गुड़गाँव की शिक्षिका सुश्री वाणी शर्मा ने इस कार्यशाला में प्रतिभागी के रूप में भाग लिया। यह कार्यशाला दोपहर 1:00 बजे से 3:00 बजे तक चली।

कार्यशाला में मुख्य प्रवक्ता डॉ. नीलकंठ कुमार (असिस्टेंट प्रोफेसर, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. कन्वीनर एवं कोऑर्डिनेटर, हिंदी पाठ्यपुस्तक विकास) ने नई पाठ्यपुस्तकों की विशेष संरचना, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन प्रक्रियाएँ, और अधिगम प्रतिफल पर विस्तृत चर्चा की। दक्षताएँ और समावेशी विषयवस्तु का एकीकृत समावेश भी प्रमुख रूप से प्रस्तुत किया गया। नई शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख लक्ष्य शिक्षा में गुणवत्ता, समग्रता और पहुंच को बढ़ाना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नई किताबों के साथ सेतु पाठ्यक्रम का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के आलोक में नई पाठ्यपुस्तकों, विशेष रूप से 'मल्हार' के उपयोग, सेतु पाठ्यक्रम के महत्व और इन बदलावों को अपनाने में शिक्षकों की भूमिका पर केंद्रित है। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के अनुसार यह नीति तैयार की गई है इसमें पाठ्यपुस्तक निर्माण के सिद्धांतों और आकलन की प्रक्रिया को भी शामिल किया गया।

मल्हार पाठ्यपुस्तक में ऑडियो–वीडियो सामग्री, QR ,NCERT YouTube चैनल का संदर्भ पर भी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध है। शिक्षक और छात्र दोनों ही इन संसाधनों का उपयोग पूरक सामग्री के रूप में कर सकते हैं, जिससे विषय की गहरी समझ विकसित होगी। शिक्षक कक्षा में इन संसाधनों का प्रयोग करके सीखने को अधिक आकर्षक और प्रभावी बना सकते हैं।

'मल्हार' भारत की ज्ञान समृद्ध परंपरा और संस्कृति को आधार बनाकर तैयार की गई हैं। यह छात्रों को अपनी जड़ों से जोड़ने और बहु–विषयक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि वे केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित न रहें, बल्कि छात्रों के समग्र विकास पर भी ध्यान पाठ्यपुस्तकें छात्रों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच और समस्या–समाधान कौशल को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) स्कूल शिक्षा के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसके तहत पाठ्यपुस्तक निर्माण और आकलन की प्रक्रिया को भी नया रूप दिया गया है।आकलन सीखने सिखाने की प्रक्रिया से जुड़ा होना चाहिए का उद्देश्य छात्रों को निरंतर प्रतिपुष्टि प्रदान करना है ताकि वे अपनी प्रगति को समझ सकें और सुधार कर सकें। यह समग्र आकलन पर जोर देता है वैचारिक समझ, अनुप्रयोग और विश्लेषणात्मक कौशल का मूल्यांकन किया जाता है।

संक्षेप में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जिसमें नई पाठ्यपुस्तकें, सेतु पाठ्यक्रम और डिजिटल उपकरण शिक्षा को अधिक समावेशी, आकर्षक और परिणाम–उन्मुख बनाते हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकों की भूमिका केंद्रीय है, जिन्हें इन बदलावों को खुले मन से अपनाना होगा और सीखने की प्रक्रिया को छात्र–केंद्रित बनाना होगा।

डॉ. नीलकंठ कुमार ने विषय को अत्यंत सरल, बोधगम्य, और आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया।

सभी प्रकार की शंकाओं का समाधान व्यवस्थित और संतोषजनक ढंग से किया गया। यह कार्यशाला न केवल ज्ञानवर्धक रही, बल्कि शिक्षण के प्रति मेरी दृष्टिकोण और पद्धतियों को भी नया आयाम प्रदान करने वाली सिद्ध हुई। इस कार्यशाला ने मुझे हिंदी शिक्षण के आधुनिक

दृष्टिकोणों से साक्षात्कार कराया।अनुभवात्मक अधिगम, कहानी–केंद्रित शिक्षण, और प्रौद्योगिकी का एकीकरण जैसे नवीन पहलुओं ने मुझे अपने शिक्षण में नवाचार हेतु प्रेरित किया। अब मैं अपने कक्षा शिक्षण में इन नवाचारों को समाहित कर एक समृद्ध, समावेशी और संवेदनशील शिक्षण वातावरण निर्मित करने का प्रयास करूंगी ।